पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

विश्वविद्यालय कार्यपरिषद् की अट्ठाइसवीं* बैठक (आपात) बुधवार, दिनांक 26.04.2017 को अपरान्ह 03.00 बजे की विषयसूची

01. विश्वविद्यालय की 23वाँ दीक्षांत समारोह में प्रो. आशीष दत्ता, सुविख्यात सेवानिवृत्त वैज्ञानिक (**Distinguished Emeritus Scientist**) भूतपूर्व निदेशक एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर को मानद उपाधि प्रदान करने हेतु गठित समिति की अनुशंसा का अनुमोदन करने पर विचार करना।

टीप : विद्यापरिषद् की स्थायी समिति की बैठक दिनांक 22.04.2017 को **प्रो. आशीष दत्ता, सुविख्यात सेवानिवृत्त वैज्ञानिक (Distinguished Emeritus Scientist) भूतपूर्व निदेशक एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर,** पौध आनुवंशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR) एवं कुलपति, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) नई दिल्ली, पौध आनुवंशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR), अरुणा आसफ अली मार्ग, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय परिसर, नई दिल्ली को गरिमामयी तेईसवाँ दीक्षांत–समारोह में उनकी उपलब्धियों तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके कार्यक्षेत्र में राष्ट्र के लिए योगदान को दृष्टिगत रखते हुए डी. एस–सी. (जीव विज्ञान संकाय) की मानद् उपाधि प्रदान करने हेतु समस्त सदस्यों द्वारा एकमत से प्रस्ताव पारित किया, जिसे –

परिनियम–14 Honorary Degree के प्रावधानानुसार मानद् उपाधि प्रदान करने के लिए माननीय कुलाधिपति महोदय द्वारा गठित समिति की बैठक दिनांक 23.04.2017 में प्रो. आशीष दत्ता, सुविख्यात सेवानिवृत्त वैज्ञानिक (Distinguished Emeritus Scientist) भूतपूर्व निदेशक एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, पौध आनुवंशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR) एवं कुलपति, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) नई दिल्ली को जीव विज्ञान संकाय में D.Sc. की मानद् उपाधि से सम्मानित करने हेतु अनुशंसित किया गया। समिति की अनुशंसा संलग्न।

कुलसचिव

क्रमांक : **3883** /अका./वि.प.स्थायी समिति/**2017** रायपुर, दिनांकः **22 / 04/2017**

विश्वविद्यालय विद्यापरिषद् की स्थायी समिति की बैठक शनिवार, दिनांक 22.04.2017 अपराह्न 05.00 बजे विश्वविद्यालय प्रशासनिक भवन के कुलपति सचिवालय के बैठक–कक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे –

1. प्रो. एस.के. पाण्डेय, कुलपति	–	अध्यक्ष
2. डॉ. शैलेन्द्र सराफ	–	सदस्य
3. डॉ. शैल शर्मा	–	सदस्य
4. डॉ. राजीव चौधरी	–	सदस्य
5. डॉ. जेड.टी. खान	–	सदस्य
6. डॉ. ए.के. श्रीवास्तव	–	सदस्य
7. डॉ. विजय अग्रवाल	–	सदस्य
8. डॉ. मोयना चक्रवर्ती	–	सदस्य
9. डॉ. सी.एल. पटेल	–	सदस्य
10. श्री धर्मेश कुमार साहू, कुलसचिव	–	सचिव

निम्नलिखित निर्णय लिये गये :–

01. विश्वविद्यालय की 23वाँ दीक्षांत समारोह में मानद उपाधि प्रदान करने के संबंध में विचार करना।

निर्णयः **प्रो. आशीष दत्ता, सुविख्यात सेवामुक्त वैज्ञानिक, भूतपूर्व निदेशक एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, पौध आनुवंशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR) एवं कुलपति, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) नई दिल्ली, पौध आनुवंशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR), अरुणा आसफ अली मार्ग, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय परिसर, नई दिल्ली को गरिमामयी तेईसवाँ दीक्षांत–समारोह में उनकी उपलब्धियों तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके कार्यक्षेत्र में राष्ट्र के लिए योगदान को दृष्टिगत रखते हुए डी.एस–सी. (जीव विज्ञान संकाय) की मानद् उपाधि प्रदान करने हेतु समस्त सदस्यों द्वारा एकमत से प्रस्ताव पारित किया।**

अध्यक्ष को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

कुलपति
अध्यक्ष

कुलसचिव
सचिव

पृ. क्र. **3884** /अका./वि.प.स्थायी समिति/**2017** रायपुर, दिनांकः **22/ 04 /2017**

प्रतिलिपि :–

1. समस्त संकायाध्यक्षों को,
2. उ.कु.स. गोपनीय/परीक्षा,
3. वित्त नियंत्रक/अंकेक्षण,
4. कुलपति के सचिव/कुलसचिव के निजी सहायक, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु अग्रेषित।

कुलसचिव

पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

क्रमांक / 2261 / के.एस. / 2017 रायपुर , दिनांक 23 अप्रेल, 2017

परिनियम क्रमांक–14 Honorary Degree के प्रावधानानुसार मानद् उपाधि प्रदान करने हेतु गठित समिति की बैठक **रविवार, दिनांक 23 / 04 / 2017 को अपराह्न 5.00 बजे** कुलपति कक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए –

1. प्रो. एस.के. पाण्डेय, कुलपति
2. डॉ. जी.डी. शर्मा, कुलपति, माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति द्वारा नामांकित
3. डॉ. (श्रीमती) मोयना चक्रवर्ती, संकायाध्यक्ष, लाईफ साइंस संकाय

विषयसूची :– विश्वविद्यालय के 23वां दीक्षांत समारोह में मानद् उपाधि प्रदान करने हेतु अनुमोदन के संबंध में।

कार्यवृत्त :

विश्वविद्यालय का तेईसवां दीक्षांत समारोह दिनांक 09 मई, 2017 को आयोजित होना सुनिश्चित हुआ है। विश्वविद्यालय विद्यापरिषद् की स्थायी समिति द्वारा प्रो. आशीष दत्ता, सुविख्यात सेवानिवृत वैज्ञानिक (Distinguished Emeritus Scientist), भूतपूर्व निदेशक एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, पौध आनुवांशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR) एवं कुलपति, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) नई दिल्ली, पौध आनुवंशिक अनुसंधान परिसर, नई दिल्ली को उनकी उपलब्धियों तथा राष्ट्रीय स्तर पर उनके कार्यक्षेत्र में राष्ट्र के लिए योगदान को दृष्टिगत रखते हुए विश्वविद्यालय के तेईसवां दीक्षांत–समारोह में डी.एस.–सी. (जीव विज्ञान संकाय) की मानद् उपाधि प्रदान करने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया। प्रो. आशीष दत्ता के संक्षित जीवनवृत्त सार निम्नानुसार है :–

प्रो. आशीष दत्ता ने अपनी एम एस.सी (1964), पीएच.डी. (1968) एवं डी एस.सी. (1972), कोलकाता विश्वविद्यालय से की है।

प्रोफेसर आशीष दत्ता ने भारत सरकार फेलो बोस इंस्टीट्यूट, कोलकाता (1964–1968), रिसर्च एसोसिएट, लोक स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, न्यूयार्क, यूएसए (1971–1973), दो चरणों में (1976–1977 और 1980–81), उन्होंने रोशे इंस्टीट्यूट ऑफ मॉलिकुलर बायोलॉजी, यूएसए में मूर्धन्य विद्वान प्रो.सिवेशे ओचोआ के साथ विजिटिंग वैज्ञानिक के रूप में, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ लाईफ साईंस, जेएनयू (1978–1978), प्रोफेसर, स्कूल ऑफ लाईफ साईंस, जेएनयू (1978–2008), डीन एवं प्रोफेसर स्कूल ऑफ

लाईफ साईंस, जेएनयू (1983–1985), रेक्टर एवं प्रोफेसर, जेएनयू (1993–1996), कुलपति (1996–2002) एवं अध्यक्ष, पौध आनुवंशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR) (1998–2002), संस्थापक निदेशक, पौध आनुवंशिक अनुसंधान राष्ट्रीय संस्थान (NIPGR) (जून 2002–2008), प्रोफेसर ऑ एमिनेन्स, NIPGR (2008–28 फरवरी 2013), वैज्ञानिक, NIPGR (01 मार्च 2013 से आज दिनांक तक) के रूप में कार्य किए।

प्रोफेसर आशीष दत्ता पौध और खमीर (यीस्ट) के आण्विक जीव विज्ञान के क्षेत्र में एक सुविख्यात वैज्ञानिक हैं। उनका वैज्ञानिकी योगदान समाज के हित के व्यापक क्षेत्रों में, यथा खाद्य एवं पोषणीय सुरक्षा, प्रतिरक्षा अल्पता संबंधी रोगों का नियंत्रण और जीएम फसलों का उपयोग रहा है। कैण्डिडा अल्बिकैन्स के प्रचण्ड तत्वों और रोगमूलकता पर उनके अनुसंधान कार्य ने समाघात कैण्डिडायसिस की चिकित्सा के डिजाइन की संभावना सृजित की है। एड्स के विषाणु (वायरस) से प्रभावित लोग अनिवार्यतः द्वितीयक कैण्डिडा अल्बिकैन्स संक्रमण की ओर प्रवृत्त होते हैं, जिसके फलस्वरूप प्रचुर संख्या में घातकता होती है। प्रो. दत्ता के अनुसंधान ने पहली बार उपगार किया कि कैण्डिडा अल्बिकैनों में GLcNAc (एन–एसिटिलग्लूकोसैमिन) का अपचयी मार्ग उसकी रोजनकता का एक महत्वपूर्ण पहलू है और GLcNAc कैटाबॉलिस्म हेतु उत्तरदायी जीवों एक समूह के रूप में स्थापित होते हैं।

पौध बायोप्रौद्योगिकी में अद्यतन उपलब्धियों ने विश्व स्तर पर पोषण एवं खाद्य सुरक्षा के लिए क्षेत्र बेहतर गुणवत्ता और उन्नत उत्पादकता के साथ फसल की प्राप्ति हेतु प्रबल संभावना और लक्ष्य हेतु मार्ग प्रशस्त किया है। एक दशक से अधिक अवधि से प्रो.दत्ता की प्रयोगशाला पौषणीय आनुवांशिकों के क्षेत्र से जुड़ी है। पौषणीय अनुवांशिकोंकस एक लक्ष्य फसल तैयार करना है(आनुवांशिक रूप से संशोधित) जिसके सृजन का उद्देश्य मानवों और पालतू मवेशियों के लिए बेहतर पोषक तत्व (न्यूट्रिशन) प्रदान करना है। वे आण्विक सामाजिक मूल्य की ट्रांसजैनिकों के उत्पादन हेतु प्रवृत्त विलक्षण जीनों की पहचान और कुशल प्रयोग के लिए जाने जाते हैं।

प्रोफेसर दत्ता ने अपना व्यावसायिक कैरियर वर्ष 1973 में स्कूल ऑफ लाईफ साईंस, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली में आरंभ किया और मात्र 34 वर्ष की युवा आयु में वर्ष 1978 में उनकी पदोन्नति प्रोफेसर के रूप में हुई। उन्होंने लगभग 6 वर्षों तक जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में अपना विशिष्ट योगदान दिया। नई संरचनाओं (स्वास्थ्य केन्द्र और अनेक नए हॉस्टल (छात्रावास) भवनों आदि) के विकास के अलावा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रो.दत्ता द्वारा अनुसंधान के नए–नए क्षेत्रों पर केन्द्रित अनेक विशेष केन्द्रों का सृजन किया गया। उनके कार्यकाल के दौरान इस विश्वविद्यालय में पहली बार बड़ी संख्या में नवाचारी विषय क्षेत्रों का प्रादुर्भाव हुआ। इसमें

सूचना प्रौद्योगिकी स्कूल, जवाहर लाल प्रगत अध्ययन संस्थान, आण्विक दवाई (औषधि) के लिए विशेष केन्द्र, विधि और शासन प्रबंध के अध्ययन हेतु केन्द्र, संस्कृत अध्ययन केन्द्र और दर्शन शास्त्र केन्द्र शामिल हैं। नए विषय क्षेत्रों को आरंभ करने के अलावा वे कला एवं सौंदर्यबोध शास्त्र स्कूल तथा विज्ञान नीति केन्द्र के पुनरूद्धार के लिए भी प्रेरक थे। अपने अनुसंधान और प्रशाासनिक कौशलों के मार्फत योगदान के अलावा वे शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत ही सक्रिय रहे हैं। उन्होंने पौध आनुवंशिक शोध राष्ट्रीय संस्था, भारत का प्रथम यूकेरायोटिक जीनों के ''संरचना–कार्य–प्रयोग'' पर केंद्रित शोध संस्थान की भी स्थापना की। संस्थापक निदेशक के रूप में प्रोफेसर दत्ता प्रस्थान रेखा से हरिक क्षेत्र परियोजना को विकसित करने हेतु योजनाओं की दूरदर्शिता, योजना निर्माण और क्रियान्वयन हेतु भी उत्तरदायी थे। वर्तमान में संस्थान 300 से अधिक शोधार्थियों को पौध आनुवंशिकी के क्षेत्र में तीक्ष्ण एवं प्रखर शोध के निष्पादन के लिए पोषक के रूप में कार्यरत हैं।

अग्रणी अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में 200 से अधिक शोध पत्रों का प्रकाशन हुआ। उनके समूह (दल) के द्वारा खोज किए गए पॉच उपयोगी जीन हैं। पॉच नए जीनों के पृथक्करण से लेकर ट्रांसजेनिकों के उत्पादन तक के सभी कदमों को पहले से ही निष्पादित किया गया था और ये जीन भारत, अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, केनेडा (कनाडा), जापान और सिंगापुर में पेटेण्टकृत हैं।

भारत और विदेश में 50 से अधिक प्रसिद्ध/ख्यातिप्राप्त व्याख्यानों सहित 300 से अधिक व्याख्यान दिया गया। प्रमुख सम्मेलनों/संगोष्ठियों/शोध संस्थाओं/ विश्वविद्यालयों आदि में विश्वव्यापी सर्वांगीण व्याख्यान दिया गया। भारत और विदेश के अग्रणी विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में दीक्षांत समारोह संबोधन/स्थापना दिवस व्याख्यान भी उनके द्वारा दिया गया।

प्रोफेसर दत्ता द्वारा 100 से अधिक पीएच.डी और पोस्ट–डॉक्टोरल विद्यार्थियों को मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विभिन्न शोध संगठनों में व्यावसायिक प्रोन्नति और नेतृत्व पदो के लिए अनेक फैकल्टी सदस्यों और वैज्ञानिकों को यथोचित परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

प्रोफेसर दत्ता अनेक प्रतिष्ठित अवार्डों, यथा सीएसआईआर द्वारा जीवविज्ञान के क्षेत्र में शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार (1980), गुहा स्मृति अवार्ड (1988), सर अमूल्य रतन वाग्मिता अवार्ड (1988), विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए प्रथम घनश्याम दास बिड़ला अवार्ड (1991), डॉ.नित्या आनंद प्रतिभा अवार्ड, INSA (1993), लाईन साईंस में शोध एवं विकास के लिए ICCI (इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज) संघ अवार्ड (1994), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हेतु ओम भसीन अवार्ड (1995), जीवविज्ञान के लिए विज्ञान की तीसरी दुनिया

अकादमी अवार्ड (TWAS) (1996), डी.एम.बोस प्रतिभा व्याख्यान (1996), जीवन विज्ञान (लाईफ साईंस) में गोयल पुरस्कार (1996), चिकित्सा विज्ञान में रैनबैक्सी अवार्ड (1996), INSA का जवाहर लाल नेहरू जन्म शताब्दी व्याख्यान (1999), इंदिरा गांधी प्रियदर्शिनी अवार्ड (2000), बायो मेडिकल के लिए आर.डी.बिरला अवार्ड (2001), भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, भारत सरकार द्वारा बायोमेडिकल अनुसंधान (शोध) में उत्कृष्टता हेतु डॉ. बी.आर.अम्बेडकर शताब्दी अवार्ड (2003), बिशंभर नाथ चोपड़ा व्याख्यान अवार्ड, INSA (2004) आदि के प्राप्तकर्ता हैं। प्रो.आशीष दत्ता को वर्ष 1999 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वे TWAS भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA), भारतीय साईंस अकादमी और राष्ट्रीय विज्ञान एकादमी, भारत के फेलो (अधिसदस्य) हैं। प्रो. दत्ता राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (भारत) के अध्यक्ष थे (2009–11)। उनके व्यापक योगदान के लिए प्रो. दत्ता को अनेक विश्वविद्यालयों के द्वारा डॉक्टर ऑफ साईंस की उपाधि से नवाजा गया। प्रोफे. आशीष दत्ता, इंडियन साईंस कांग्रेस एसोसिएशन (भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ) के वर्ष 2003–2004 की अवधि के महाअध्यक्ष थे और RAB (रिक्रूटमेंट ऑफ असेसमेंट बोर्ड), CSIR के अध्यक्ष के रूप में तीन वर्षों की अवधि के लिए पदस्थ थे। उन्हें जनवरी, 2005 में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 92वें सत्र में आशुतोष मुखर्जी पदक अवार्ड से सम्मानित किया गया और उन्हें जनवरी 2006 में आयोजित इंडियन साईंस कांग्रेस के 93वें सत्र में वर्ष 2005–06 के लिए प्रोफे. आर.सी. मेहरोत्रा लाईफटाईम उपलब्धि अवार्ड से, वर्ष 2007 के लिए अंतरराष्ट्रीय पेंगुईन प्रकाशन गृह द्वारा प्रदत्त "भारत के उदीयमान व्यक्तित्व अवार्ड" बायोलॉजिकल विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय चरित्रवान और अतिविशिष्ट/विलक्षण निष्पादन के लिए स्वर्ण एवं रजत ट्रॉफी तथा स्वर्ण पद से, आधार चंद्र मुखर्जी अवार्ड, कोलकाता विश्वविद्यालय (2009) से सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से प्रोफेसर दत्ता को वर्ष 2008 में सम्मानित किया गया। उन्हें बायोटेक रिसर्च सोसायटी द्वारा लाईफ टाईम उपलब्धि अवार्ड (2011), उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए प्रियदर्शिनी स्वर्ण पदक अवार्ड (2011), नवाचारी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हेतु गुजरमल मोदी अवार्ड (2011), भारत रत्न मदर टेरेसा स्वर्ण पदक अवार्ड (2014), पं. जवाहर लाला नेहरू स्वर्ण पदक अवार्ड (2014), भारत विकास अवार्ड (2016), और विज्ञान गुरू श्रेष्ठ परामर्शदाता अवार्ड, यूएसए (2016) से भी सम्मानित किया गया।

लाईफ साईंस के क्षेत्र में जीवन–पर्यन्त योगदान के लिए बर्दमान विश्वविद्यालय द्वारा (2003), विधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय (2004) और विद्यासागर विश्वविद्यालय (2008) जैसे भारत के अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा उन्हें डॉक्टर ऑफ साईंस (मानद) उपाधि प्रदान किया गया।

प्रोफेसर दत्ता ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने विशिष्ट योगदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित अवार्ड प्राप्त किया। उनकी व्यावसायिक उपलब्धियों को भी विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा उन्हें प्रदत्त उपाधियों द्वारा और असंख्य व्यावसायिक निकायों, जैसे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA); भारतीय विज्ञान अकादमी(IAS); राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी(NSA); थर्ड वर्ल्ड एकेडमी ऑफ साईंस (TWAS), (ट्रिस्टी, इटली) में उनके चयन या मनोनयन द्वारा सराहा गया है। प्रोफेसर दत्ता के समूह (दल) को उच्च सामाजिक मूल्यों के ट्रांसज़िनिकों के उत्पादन के प्रति विलक्षण जीनों की पहचान और कुशल प्रयोग और आण्विक जीवविज्ञान में उल्लेखनीय योगदानों के लिए भी जाना जाता है। अनेक अंरराष्ट्रीय स्तरीय सम्मानित संस्थाओं में उन्होंने शोध कार्य और शिक्षण कार्य किया है और अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में अनेक प्रकाशनों के साथ और भारतीय और अमेरिकी पेटेंटों के साथ तीन दशकों से अधिक अवधि से बेसिक और एप्लाइड बायोकेमिस्ट्री तथा आण्विक बायोलॉजी में उन्होंने अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। वास्तव में, भारत में उसके समूह द्वारा पहली बार जीनों को अमेरिका में पेटेण्ट किया गया। प्रोफेसर दत्ता और उनकी टीम ने नई बायोलॉजी को बायोप्रौद्योगिकी में एक वैश्विक भागीदार बनाने के लिए कृषि, औषधि, विज्ञान, उद्योग और समाज के साथ जोड़ा है। उनके अनवरत अथक प्रयास से भारत में यूकारायोटिक जीनों के ''संरचना–कार्य–प्रयोग'' पर शोध का एक सशक्त स्कूल की स्थापना हुई है, जिसने भारत के प्रथम और अपने प्रकार का एकमात्र अनुसंधान (शोध) केन्द्र–''राष्ट्रीय पौध आनुवंशिक अनुसंधान संस्थान'' की स्थापना में पराकाष्ठा प्रदान की है।

ऐसे प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व के धनी पद्मभूषण वैज्ञानिक डॉ. आशीष दत्ता, Distinguished Emeritus Scientist, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट जीनोम रिसर्च, नई दिल्ली को दिनांक 09 मई, 2017 को आयोजित विश्वविद्यालय के गरिमामयी तेईसवां दीक्षांत–समारोह में विश्वविद्यालय परिनियम क्रमांक–14 के प्रावधानानुसार उनकी उपलब्धियों तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके कार्यक्षेत्र में राष्ट्र के लिए योगदान को दृष्टिगत रखते हुए **डी.एस.–सी. (जीव विज्ञान संकाय)** की **मानद् उपाधि** प्रदान करने की अनुशंसा की जाती है।

(प्रो. एस.के. पाण्डेय)
कुलपति

G. D. Sharma 23.4.17
(डॉ. डॉ. जी.डी. शर्मा)
माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति
द्वारा नामांकित

डॉ. (श्रीमती) मोयना चक्रवर्ती
संकायाध्यक्ष,
लाईफ साइंस संकाय